मात-पिता को फालो कर मायाजीत, प्रकृतिजीत और कर्मेन्द्रिय जीत बनो

आज जब भोग लेकर वतन में गई तो एक विचित्र सीन देखी। वैसे तो मम्मा-बाबा दोनों ही इक्ट्ठे दिखाई देते थे लेकिन आज मम्मा वतन में अकेली बैठी हुई थी। तो मैं सोचने लगी कि आज बाबा नहीं दिखाई दे रहा है। मम्मा अकेले बैठी है। लेकिन मम्मा का उस समय जो स्वरूप था वह इतना प्यारा वात्सल्य भरा था, जो मैं मम्मा के उस प्यार में खो गई, मुझे भूल गया कि बाबा नहीं हैं। मुझे ऐसे लगा जैसे मम्मा आज बाबा की भी भासना दे रही है और अपना भी दुलार दे रही हैं। तो मैं जैसे मात-पिता की गोद में समा गई। मैं यह अनुभव ही कर रही थी तो इतने में बाबा आये, मैं बाबा की ओर देखने लगी, मैंने कहा बाबा आप कहाँ गये थे? तो बाबा मुस्कराये, कहा कि आज आपने मम्मा को बुलाया है ना। मैंने कहा बाबा के बिना मम्मा नहीं, मम्मा के बिना बाबा नहीं। तो बाबा मुस्कराने लगे। फिर बाबा ने मम्मा को कहा कि बच्ची बताओ, आपको कितने बच्चे हैं? कितने बच्चे आपको पहचानते हैं? कितने बच्चों ने आपको देखा है? तो मम्मा बाबा को बहुत प्यार से देख रही थी और मुस्करा रही थी। तो बाबा ने कहा चलो आपको दिखलाऊं कि

आपको कितने बच्चे जानते हैं। इतने में एक बहुत बड़ी सभा वतन में इमर्ज हो गई। पहले मम्मा-बाबा दोनों सारी सभा को दृष्टि दे रहे थे। सब बच्चे इतने प्रेम में, लगन में मगन थे जैसे कोई जादू में बंधे हुए बैठे थे। तो बाबा ने कहा पूछो बच्ची मम्मा को कौन जानता है? फिर बाबा ने पूछा मम्मा की पालना कितनों ने ली है? तो बहुत थोड़े बच्चों ने हाथ उठाया। फिर बाबा ने कहा अच्छा साकार में बाबा को कितने बच्चों ने देखा है? तो उसमें थोड़े ज्यादा थे।

तो बाबा ने कहा कि इतने मम्मा-बाबा से डायरेक्ट जन्म लेने वाले, पालना लेने वाले हैं, बाकी सब कौन हैं? फिर बाबा ने सुनाया कि यह सब बच्चे मात-पिता के संकल्प की रचना हैं। बाबा ने इनको कहाँ-कहाँ से अपना बनाया है, अनुभव कराया है। यह संकल्प की रचना भी पावरफुल है, जो कितनी दूर-दूर से आई है। भले इनके अन्दर आता है कि हमने साकार में नहीं देखा लेकिन अव्यक्त रूप में इनको मात-पिता की पूरी अनुभूति समय-प्रति-समय होती रहती है। अनुभव की चीज़ कभी भूलती नहीं है। तो बाबा ने कहा देखा बच्ची - कितने बाबा के बच्चे हो गये हैं।

फिर मैंने कहा मम्मा अभी सब कहते हैं कि अब कुछ नवीनता होनी चाहिए, सबके अन्दर आता है कि आप सब कहाँ हैं, अब तो कुछ पर्दा खुलना चाहिए कि यह कहाँ-कहाँ हैं! तो मम्मा ने बाबा की ओर देखा। बाबा ने कहा कि अच्छा बच्ची बता दूँ कि फलानी जगह तुम्हारी मम्मा है, फलानी जगह दीदी है, आप वहाँ जाकर पहचान लोगी! हमने कहा बाबा आप थोड़ी मदद करेंगे तो हो सकता है। तो बाबा ने कहा अच्छा सभी साक्षात्कार मूर्त बन गये हो! साक्षात्कार, सम्पूर्ण और सम्पन्न का होता है। तो आप सब सम्पूर्ण साक्षात्कार मूर्त बन गये हो? तो मैं चुप रही। तो बाबा ने कहा कि जब आप बच्चे साक्षात्कार मूर्त, सम्पन्न बाप समान बन जायेंगे तो आपको कहने की आवश्यकता नहीं रहेगी, स्वत: ही आपका साक्षात्कार उनको और उनका साक्षात्कार आपको होगा। जैसे आपने अन्तिम समय में साकार

मात-पिता की स्टेज देखी - सबके बीच में होते, प्रकृति के बंधन में होते हुए भी न्यारे-प्यारे लगते थे, सबको दूर से ही साक्षात्कार होता था। सब अव्यक्त स्थिति में ऑटोमेटिकली स्थित हो जाते थे। उनको सूक्ष्मवतन का, परमधाम का, नई दुनिया का अनुभव हो जाता था। तो आप बच्चे भी जब साक्षात्कार मूर्त, साक्षात बाप समान बन जायेंगे तो समझो प्रत्यक्षता हुई कि हुई। फिर दोनों के सम्पूर्ण स्वरूप का एक दो को अनुभव और साक्षात्कार होगा। बाबा ने कहा देखो बच्ची, आप कहती हो बाबा बताओ मम्मा कहाँ है, भाऊ कहाँ है....लेकिन अभी वह समय नहीं आया है, समय आने पर सब प्रत्यक्ष हो जायेंगे।

फिर मैंने बाबा को कहा, बाबा सभी बच्चे सूक्ष्मवतन का अनुभव करना चाहते हैं, मूलवतन का गेट तो जब खुले, आप एक बार सूक्ष्मवतन का गेट तो खोल दो। तो बाबा बोले, बच्ची सूक्ष्मवतन, मूलवतन का गेट तो साथ-साथ ही खुलेगा। वाया सूक्ष्मवतन ही सब मूलवतन में जायेंगे। जब बाबा ऐसे बोल रहे थे तो एक दृश्य सामने इमर्ज हुआ - क्या देखा जैसे मम्मा-बाबा आगे-आगे, उनके पीछे सभी दादियां और ढेर सारी आत्माओं का समूह, एक दो के पीछे-पीछे बरात की तरह सूक्ष्मवतन, मूलवतन की ओर जा रहा है। थोड़ी देर में यह दृश्य मर्ज हो गया।

फिर मैंने कहा बाबा आज आपने और दादियों को, दीदी को वतन में नहीं बुलाया। ऐसे कहा तो जैसे कोई छिपा हुआ खड़ा होता है, बाबा ने ताली बजाई और सब सामने आ गये। तो बाबा ने कहा कि जब तुम अपनी माँ से मिल रही थी तब मैं इन बच्चों से मिल रहा था। मैंने दीदी से पूछा कि आपको बाबा क्या सुना रहा था? तो दीदी ने कहा तुम मम्मा से क्या बात कर रही थी? मैंने कहा मैं तो मम्मा से बहुत प्यार भरा सुख ले रही थी। तो दीदी ने कहा कि मैं भी बाबा से सुख ले रही थी।

फिर दीदी ने मम्मा को कहा कि मम्मा आप ऐसी कोई बात सुनाओ जो हर एक के अन्दर पुरुषार्थ की लहर आ जाये। तो मम्मा ने बाबा को देखा,

बाबा ने कहा कि मैं तो बच्चों को समय प्रति समय इशारे देता रहता हूँ ताकि बच्चे उलहना न दें। जैसे मम्मा को स्वयं पर निश्चय था कि मैं बाबा की श्रेष्ठ, सम्पूर्ण आत्मा हूँ, इस संकल्प से ही मम्मा की चलन, बोलचाल देखा, अनुभव किया। दूसरा - मम्मा को बाबा में कितना विश्वास था। बाबा कहता कि मैं जो हूँ जैसा हूँ, मुझे कोटों में कोई पहचानता, तो उस पहचानने में मम्मा पहला नम्बर थी। बाबा ने जो आज्ञा दी मम्मा ने उस आज्ञा को वैसे का वैसा ही किया। जीवन में लाया और एक सैम्पल बनकर दिखाया। तीसरा - मम्मा को बाप के ज्ञान में इतना निश्चय था कि कभी भी बाबा की कोई प्वाइंट को यह कैसे, यह क्या! यह कभी नहीं कहा। चौथा - मम्मा को ड्रामा पर इतना निश्चय था कि कुछ भी हो जाए, यह क्यों हुआ, कैसे हुआ... यह कभी सवाल मम्मा ने नहीं उठाया। इसमें मम्मा पहला नम्बर थी, इसलिए पहले नम्बर में पूज्य बनी। इस संगमयुग के महानता की पूजा जितना मम्मा की है, उसकी भेंट में और देवियों की कम है। अभी बच्चों के सामने मम्मा-बाबा और अनन्य बच्चे सैम्पल हैं। अब भी समय है जो इनको देखकर फालो करो, मायाजीत, प्रकृतिजीत, कर्मेन्द्रिय जीत बनो। हर एक समझे मैं अपनी कर्मेन्द्रियों का राजा हूँ, राजा बनके चलो तो यह सब बातें ऑटोमेटिकली आ जायेंगी। फिर मम्मा ने कहा कि मेरे मन की बात बाबा ने कह दी। तो सभी बच्चों को मेरी याद-प्यार देकर कहना कि बाबा ने जो यह अन्दर की स्थिति और रिज़ल्ट बताई, उसे देखते हुए रियलाइज़ करके, करेक्शन करके, कनेक्शन जोड़कर अपनी स्थिति को सम्पन्न बनायें। फिर बाबा ने मम्मा को यज्ञ का ब्रह्माभोजन खिलाया। फिर सभी एडवांस पार्टी की दादियों ने सभी को, दादी जी को, दादी जानकी जी को और सभी भाई-बहनों को बहुत-बहुत याद-प्यार दिया। ऐसे याद-प्यार देते हुए बाबा ने हमें हमारे वतन में भेज दिया।